मैं शून्य हूँ

अतुल गर्ग

मैं कुछ नहीं पर पूर्ण हूँ, आरम्भ नहीं सम्पूर्ण हूँ।
सांख्य के गर्भ से प्रस्फुटित प्रकाश हूँ।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

आदि से अनन्त तक, ऋणतल से धनाकाश तक।
मूल में हूँ मध्य में हूँ, संतुलन हूँ शांत हूँ।
निर्विकार भाव से, मैं केन्द्र की कमान हूँ।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

संख्याओं का मान हूँ, इनका मैं सम्मान हूँ।
स्थानिमानों में हूँ नाचता, मैं सांख्य का गुरूर हूँ।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

पूर्व में अमानी हूँ तो, बाद का मैं मान हूँ।
जुड़ाव या घटाव में मैं, मूल अंक सम मान हूँ।
समभाव सहित .....अभिमान रहित, शिरोधार्यता की पहचान हूँ।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

कलंगी रूपी घातों में जब, अपनों के लग जाता हूँ।
सबका एकम मान कर, निकटस्थ इकाई बनाता हूँ।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

मैं खालू हूँ..... रिक्त हूँ, पर सर्वशक्ति मान हूँ।
संघर्ष या गुणन में, सांख्य का मैं काल हूँ।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

मुझ में कोई छल नहीं, सर्वोच्च सत्ता मान हूँ।
अधीनता.....दबाव में, मैं प्रचंड हूँ.....भूचाल हूँ।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

स्वयं का स्वयं से, विभाजन एकम होता है।
आज तलक निर्धारित नहीं, मेरा अनिर्णित रहता है।
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

काल के गर्भ से, गणित सागर मंथन का मैं।
निचोड़ हूँ.....परिणाम हूँ।
सर्वश्रेष्ठ गणिताधीश हूँ.....आर्यभट्ट का मान हूँ
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

सन्दर्भ के प्रमाण

1. 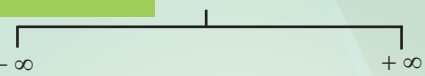

2. $213 = (2 \times 100) + (1 \times 10) + 3$
3. 0.000000001 अथवा 100000000.00
4. 001 - One, 010 -, 100 - हजार.....
5. $(x + 0 = x, x - 0 = x)$
6. $(0/x = 0)$
7. $(x)^\circ = 1$
8. ....-3, -2, -1, 0, 1, 2, 3.....
9. $(x \times 0 = 0)$

   $(x/0 = \infty)$

   $(x/x = 1)$

$(0/0 =$ अनिश्चित$)$

डॉ. अतुल गर्ग
विभागाध्यक्ष, गणित विभाग राजकीय बांगड़ महाविद्यालय
डीडवाना, नागौर 341 303 (राजस्थान)
[मो. : 09414213687;
ई-मेल : atuljjn@yahoo.co.in]